



तुज नाम मूण्युं जब काने...

- » प्रभु के नाम स्मरण से 'प्रभु हमारे साथ ही हैं', ऐसा अनुभव होता है।
- » साक्षात् परमात्मा के दर्शन से जो शुभ भाव प्रगट होते हैं, वैसे ही शुभ भाव नाम स्मरण से भी प्रगट होते हैं।
- » परमात्मा के नाम स्मरण से जब समग्र अस्तित्व रंग जाता है, तब अस्तित्व में रहे राग-द्वेष, अहंकार शिथिल बन जाते हैं।
- » राग-द्वेष की शिथिलता जीव को निर्मल बनाकर शुद्ध दशा में ले जाती है, वही शुद्ध दशा में अपने निर्मल गुणों की अनुभूति होती है, अभेदानुभूति होती है, इशानुभूति होती है।
- » प्रभु का नाम स्मरण अस्तित्व के स्तर पर जब छा जाता है, तब प्रभु ही रहते हैं, भक्त गायब हो जाता है, प्रभु को पूर्ण समर्पित हो जाता है।
- » जैसे बेहोश व्यक्ति जल छांटने से होश में आता है, वैसे मोहरूपी बेहोशी को दूर करने के लिए प्रभु का नाम जल समान है।
- » परमात्मा के नाम गुणनिष्पन्न होते हैं। जैसे शक्कर बोलते ही मीठास, नींबू बोलते ही खटास स्मृतिपथ पर आ जाती है। श्री स्थूलिभद्रजी बोलते ही ब्रह्मचर्य, गौतमस्वामी बोलते ही समर्पण स्मृतिपथ पर आ जाता है। वैसे गुणसमुद्र का परमात्मा का नामस्मरण करते ही उनके गुण स्मृतिपथ पर आ जाते हैं। जैसे ऋषभदेव बोलते ही उनके कल्याणक, 400 उपवास की महातपस्या, तीर्थस्थापना, धर्मदेशनादि का स्मरण हो ही जाता है। नाम में तो जादु होता है, 24 तीर्थकरों के नाम जिसमें है ऐसे लोगसस सूत्र का दूसरा नाम नामरत्न है। नाम बोलते ही प्रभु की मुखकृति, समवसरण, निर्लेपता आदि स्मृतिपथ पर आ जाते हैं।

